शान्तिकुञ्ज द्वारा देशभर में चलाये जा रहे रचनात्मक आन्दोलन

साधना : शान्तिकुञ्ज में नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र (हर माह की 1 से 9, 11 से 19 और 21 से 29 तक की तारीखों में) सदैव चलते हैं। अध्यात्म के गूढ़ विवेचनों की सरल व्याख्या कर उन्हें जीवन में कैसे उतारा जाय? उसके द्वारा चरित्र, चिंतन और व्यवहार में उत्कृष्टता लाकर व्यक्तित्व को कैसे प्रभावशाली बनाया जाय? इसका प्रशिक्षण नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्रों में दिया जाता है। उच्च स्तरीय साधकों के लिए अंतःऊर्जा जागरण सत्र विशेष तिथियों में आयोजित होते हैं।

लोकसेवियों का प्रशिक्षण : शान्तिकुञ्ज का एक प्रमुख उद्देश्य है लोकसेवियों का सर्वांगपूर्ण शिक्षण करके जनमानस का परिष्कार। यहाँ एक मासीय युगशिल्पी सत्र, परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र, संगीत सत्र, ग्राम प्रबंधन सत्र नियमित रूप से आयोजित होते हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षक, स्काउट-गाइड, बैंक, रेलवे, सरकारी अधिकारी, अधिवक्ता आदि वर्गों के व्यक्तित्व परिष्कार शिविर समय-समय पर आयोजित होते हैं।

शिक्षा : शान्तिकुञ्ज द्वारा स्थापित देव संस्कृति विश्वविद्यालय अपने आधुनिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में राष्ट्रभक्ति और सेवा के संस्कार जगा रहा है। यहाँ से राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा और बाल संस्कार शालाओं का संचालन होता है। यह 'युग निर्माण भारत स्काउट एवं गाइड, शान्तिकुञ्ज का मुख्यालय भी है।

संस्कार : यहाँ भारतीय संस्कृति के अनुसार सभी संस्कार (पुंसवन, नामकरण, अन्न प्राशन, मुंडन, शिखा स्थापन, यज्ञोपवीत, विवाह, जन्म दिवस, विवाह दिवस, श्राद्ध-तर्पण आदि) प्रेरक ढंग से निःशुल्क संपन्न कराने की व्यवस्था है। दिव्य वातावरण और पवित्र प्रेरणाओं से संस्कार को प्रभावशाली बनाने के साथ यहाँ प्रतिवर्ष हजारों लोग विवाह, यज्ञोपवीत आदि खर्चीले संस्कार सादगीपूर्वक सम्पन्न कराते हुए अपने और समाज के करोड़ों रुपयों की बचत करते हैं।

स्वास्थ्य : हर व्यक्ति को सरलता से स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध हो, इसके लिए शान्तिकुञ्ज ने आयुर्वेद का पुनर्जीवन किया है। आहार, विहार और विचारों की शुद्धि तथा सरलता से उपलब्ध वनौषधियों से ही स्वास्थ्य रक्षा की प्रेरणा और परामर्श शान्तिकुञ्ज द्वारा दिये जाते हैं।

स्वावलम्बन : आर्थिक स्वावलम्बन के लिए हथकरघा, हस्त निर्मित कागज, स्क्रीन प्रिंटिंग, वानिकी, बेकरी जैसे अनेक उद्योगों का यहाँ प्रशिक्षण दिया जाता है।

पर्यावरण संरक्षण : हरीतिमा संवर्धन के लिए शान्तिकुञ्ज ने वृक्षगंगा अभियान चलाया है, जिसके अंतर्गत एक करोड़ वृक्ष देश में लगाये गये हैं।

'कूड़ा निस्तारण' की शान्तिकुञ्ज में विशेष व्यवस्था है। यहाँ से कूड़े का एक कतरा भी बाहर नहीं फेंका जाता, हर प्रकार के कूड़े के रीसाइकलिंग की यहाँ व्यवस्था है।

नदी एवं तीर्थ शुद्धिकरण अभियान : गायत्री परिवार ने भागीरथी जलाभिषेक का राष्ट्रीय अभियान चला रखा है। इसके अंतर्गत गंगोत्री से गंगासागर तक गंगा स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। अब तक मध्य प्रदेश और गुजरात की जीवन रेखा-नर्मदा एवं ताप्ती, शिवना (मंदसौर म.प्र.), डोही (अलीराजपुर म.प्र.), मंदाकिनी (चित्रकूट, म.प्र.), राजस्थान की जीवन रेखा-बनास के शुद्धिकरण के लिए पिछले कई वर्षों से प्रखर अभियान चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत जलस्रोतों के घाटों की सफाई, तटीय नगर-ग्रामों में जन-जागरूकता एवं सेवा मंडलों की स्थापना, तटों पर सघन वृक्षारोपण, जैविक कृषि को प्रोत्साहन जैसे कार्य किये जाते हैं।

आपदा प्रबंधन : शान्तिकुञ्ज आपदा प्रबंधन का एक राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त केन्द्र है। यहाँ शासकीय आपदा प्रबंधन संस्थानों से प्रशिक्षित आपदा प्रबंधन दस्ता सक्रिय है, जो आकस्मिक आपदाओं के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में गंदगी-खुले में शौच की समस्या के निवारण, जनजागरण, हरीतिमा संवर्धन जैसे कार्यों में निरंतर संलग्न रहता है। पूरे देश में गायत्री परिवार की हजारों आपदा प्रबंधन इकाइयाँ हैं। देश की अनेक राष्ट्रीय आपदाओं में गायत्री परिवार ने महीनों सक्रिय रहकर राहत और पुनर्वास के कार्य किये हैं। उत्तराखंड में शासन का यह अत्यंत प्रभावी और विश्वसनीय आपदा प्रबंधन केन्द्र है। देश और प्रदेश में भूस्खलन, बादल फटने, आगजनी, बाढ़ जैसी आये दिन आने वाली आपदाओं से निपटने में शान्तिकुञ्ज की भागीदारी होती है।

कुरीति उन्मूलन : समाज को खोखला कर रहीं व्यसन, दहेज, कन्या भ्रूणहत्या जैसी अनेक कुरीतियों के विरोध में शान्तिकुञ्ज ने सशक्त अभियान चलाये हैं और शानदार सफलताएँ पायी हैं।

नारी जागरण : परम पूज्य गुरुदेव ने 'इक्कीसवीं सदी-नारी सदी' का उद्घोष करते हुए कहा था कि नारी ही नवयुग का नेतृत्व करेगी। उनके तपोबल से देश की लाखों-करोड़ों नारियों को गायत्री उपासना का अधिकार मिला। हजारों देवियाँ अपने परिवारों को संस्कारवान् बना रही हैं और पुरोहित बनकर नवचेतना जगा रही हैं। गायत्री परिवार का नारी जागरण अभियान उसे सभ्य, सुशील, संवेदनशील, संस्कारवान बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

कुछ विशिष्ट धाराएँ

- शान्तिकुञ्ज व्यक्तित्व गढ़ने की टकसाल है। जाति, संप्रदाय, धर्म, पंथ आदि संकीर्णताओं से ऊपर उठकर लोगों को यह जीवन जीने की कला सिखाता है। उन्हें आत्मवादी जीवन जीने की प्रेरणा देता है। हर धर्म-वर्ग के लोग यहाँ आकर साधना करते हैं, शिक्षण लेते हैं।
- यहाँ शरीर, मन व अंतःकरण को स्वस्थ्य, समुन्नत बनाने के लिए अद्वितीय अनुकूल वातावरण, मार्गदर्शन एवं शक्ति-अनुदान मिलते हैं।
- शान्तिकुञ्ज व्यक्ति को अंध विश्वास, मूढ़मान्यता, भाग्यवाद आदि से उठकर कर्मवादी बनने की प्रेरणा देता है। हर बात को तर्क-तथ्य और प्रमाण की कसौटी पर कसते हुए उसे विवेक पूर्वक अपनाने की प्रेरणा यहाँ दी जाती है।
- शान्तिकुञ्ज प्राचीन भारतीय परंपरा के अनुरूप संयुक्त परिवारों के प्रचलन को प्रोत्साहित करने वाला आदर्श केन्द्र है। यह विशाल आश्रम स्वयंसेवा से ही संचालित है। योग्यता के अनुसार कार्य और आवश्यकता के अनुसार साधन यहाँ रहने वाले परिवारीजनों को उपलब्ध कराये जाते हैं। सभी परस्पर हितों का ध्यान रखते हैं।
- दुनिया के जो विषय हैं, वह यहाँ हैं ही नहीं। दुनिया पद, पैसा और प्रतिष्ठा के लिए कार्य करती है, शान्तिकुञ्ज सेवा और परोपकार की भावना को प्रोत्साहित करता है।
- गायत्री चेतना (युगचेतना) का विश्वव्यापी विस्तार यहाँ से हो रहा है। पूरे विश्व में गायत्री परिवार द्वारा स्थापित 6000 से अधिक शक्तिपीठ-शाखाएँ हैं, जो यहाँ की प्रेरणा और मार्गदर्शन में जनजागरण व आध्यात्म के पुनर्जीवन के कार्यों में संलग्न हैं।
- यहाँ के शिक्षण में धर्म और विज्ञान का समन्वय है। जो धार्मिक गतिविधियाँ यहाँ चलायी जाती हैं, उनकी वैज्ञानिकता का बोध भी कराया जाता है।

आवास व्यवस्था के संदर्भ में विशेष ज्ञातव्य

- शान्तिकुञ्ज में आवास व्यवस्था केवल उन्हीं लोगों के लिए उपलब्ध है, जो यहाँ के मुख्य उद्देश्य-साधना एवं प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेने, कोई संस्कार कराने या पूर्व अनुमति लेकर तीर्थ सेवन के लिए आते हैं। शान्तिकुञ्ज में रहकर यहाँ की सभी गतिविधियों में भाग लेते हुए तीर्थ सेवन के लिए अधिकतम दो दिन की अनुमति दी जाती है।
- आवास व्यवस्था निःशुल्क है। पूर्व में आरक्षण की कोई व्यवस्था नहीं है। स्थान उपलब्ध होने पर ही दिया जा सकता है। साधकों को समूह में ही आवास व्यवस्था उपलब्ध होती है, अलग कमरे नहीं। शान्तिकुञ्ज के बाहर रहकर भी परिजन यहाँ की गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

क्या करें, कैसे जुड़ें?

1. शान्तिकुञ्ज की विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें - **'शान्तिकुञ्ज-एक परिचय'**; **'हमारा युग निर्माण सत्संकल्प'** - नवयुग की संरचना के सूत्र-सिद्धांत; **'हमारी वसीयत और विरासत'**- वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य जी की आत्मकथा।
2. युग निर्माण योजना में भागीदारी के तीन चरण हैं- उपासना, साधना और आराधना
   उपासना : आत्म परिष्कार के लिए तीन माला गायत्री मंत्र का जप करें।
   साधना : अपने दोष-दुर्गुणों को छोड़ने का संकल्प लें और अभ्यास करें।
   आराधना : समाज सेवा के किसी न किसी कार्य में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।
3. घर-परिवार के संस्कारों के शोधन के लिए नियमित बलिवैश्व यज्ञ की परंपरा अपनायें।
4. युवा एवं सक्ष आन्दोलन प्रकोष्ठ से संपर्क कर शान्तिकुञ्ज के आन्दोलनों की विस्तृत जानकारी लें और उसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।
5. यहाँ से नियमित संपर्क बनाये रखने के लिए मिशन की पत्रिकाओं के सदस्य अवश्य बनें। शांतिकुंज से ज्ञान प्रसाद-युगऋषि का साहित्य अवश्य लेकर जायें। इनका नियमित स्वाध्याय करें। युगऋषि के विचार जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाते हैं।

गायत्री परिवार की पत्रिकाएँ

अखण्ड ज्योति (मासिक) - हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, ओडिया, बंगला, तेलुगु, असमिया, कन्नड़ में; **युग निर्माण योजना** (मासिक)- हिंदी में; **युगशक्ति गायत्री** (मासिक) - गुजराती में एवं **प्रज्ञा अभियान** (पाक्षिक) - हिंदी, गुजराती, मराठी और बंगला में।

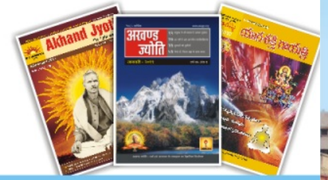

संपर्क सूत्र

गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार -249411 (उत्तराखंड)
दूरभाष : (01334) 260602 • **फैक्स :** 01334-260866
ई-मेल : shantikunj@awgp.org • **वेबसाइट:** www.awgp.org

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज

www.awgp.org

दर्शन एवं दृष्टि

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात् ।

शान्तिकुञ्ज - एक सिद्धपीठ

- शान्तिकुञ्ज एक सिद्धपीठ, चैतन्य तीर्थ है, जिसने करोड़ों लोगों के जीवन को उद्देश्यपूर्ण और सुख-शांतिमय बनाया है। यहाँ गायत्री के वैष्ठिक साधकों द्वारा प्रतिदिन औसतन 1,00,00,000 (एक करोड़) गायत्री महामंत्र का जप और 2000 साधकों द्वारा गायत्री यज्ञ किया जाता है।
- यह धर्मतंत्र से लोकशिक्षण का आदर्श केन्द्र है, जहाँ वैज्ञानिक-व्यावहारिक अध्यात्म का शिक्षण बिना किसी मूल्य के दिया जाता है।
- भारतीय संस्कृति के अनुसार सभी संस्कार प्रेरक ढंग से सम्पन्न कराने की यहाँ निःशुल्क व्यवस्था है।

सिद्धपीठ शान्तिकुञ्ज के संस्थापक

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य और माता भगवती देवी शर्मा

युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ आचार्य पं. श्रीराम शर्मा (जिन्हें युग के वशिष्ठ, व्यास, भगीरथ, याज्ञवल्क्य माना जाता है) तथा उनकी सहधर्मिणी माता भगवती देवी शर्मा (जो माता अरुंधती और माता शारदामणि की तरह उनकी अभिन्न पूरक बनकर रहीं) शान्तिकुञ्ज के संस्थापक हैं। उन्होंने अपने तपोबल से मनुष्य मात्र के लिए उज्ज्वल भविष्य सृजन करने वाली ईश्वरीय युग निर्माण योजना को विस्तार दिया। इसके लिए उन्होंने सद्बुद्धि देने वाले गायत्री मंत्र और सत्कर्म प्रेरक यज्ञ को बंधनमुक्त करके नर-नारी, अवर्ण-सवर्ण सभी के लिए सुलभ बनाया।

दर्शनीय केन्द्रों का महत्व

1 प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

ऋषियुग्म पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वंदनीया माताजी अपने जीवन काल में भी और महाप्रयाण के बाद आज भी लोगों को ऊँचा उठाने और कष्ट-कठिनाइयों को दूर करने में सहायता करते रहे हैं। उनसे भावभरी प्रार्थना करने का सर्वसुलभ स्थान है ऋषियुग्म के समाधि स्थल। लोगों का एकमत से अनुभव है कि अपने भक्तों की हितकारी प्रार्थनाओं को पूरा करने के लिए वे सदैव की भाँति आज भी हर संभव सहयोग प्रदान करते हैं।

2 यज्ञशाला

यज्ञ एक जीवन शैली है, भारतीय संस्कृति का मूल है। इसीलिए यज्ञ पर्व, त्यौहार, संस्कार आदि के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा है। शान्तिकुञ्ज की यज्ञशाला में पूज्य गुरुदेव द्वारा हिमालय से लायी गई शताब्दियों से अखण्ड अग्नि स्थापित है। शान्तिकुञ्ज की स्थापना से लेकर आज तक यहाँ प्रतिदिन यज्ञ होता है। इन दिनों प्रतिदिन औसतन 2000 साधक यहाँ साधना करते हुए इसी जीवन शैली का शिक्षण पाते हैं।

यज्ञ से प्राणशक्ति का संचार होता है। यज्ञ के प्रभाव से ही शान्तिकुञ्ज के वातावरण में दिव्यता और शांति का अनुभव होता है। एलेन राइट जैसे दिव्य द्रष्टाओं का कथन है कि यहाँ की यज्ञशाला में ऋषिगण एवं देवात्माएँ सूक्ष्म रूप में आकर अपनी यज्ञाहुतियाँ प्रदान करते हुए युग निर्माण आन्दोलन को पुष्ट करती हैं।

3 ज्ञान मंदिर (साहित्य विक्रय केन्द्र)

युग निर्माण आन्दोलन का मुख्य आधार है परम पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी विचार। उन्होंने 3200 पुस्तकों के रूप में जीवन के हर क्षेत्र को परिमार्जित करने वाला साहित्य रचा है, जो इस ज्ञान मंदिर में उपलब्ध है। यह साहित्य हर मनःस्थिति और परिस्थिति के लोगों का मार्गदर्शन व उनकी समस्याओं का समाधान करता है तथा नयी प्रेरणा, नयी ऊर्जा प्रदान करता है।

हिंदी, अंग्रेजी के साथ कई प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध यह साहित्य सर्व सामान्य की पहुँच के अनुरूप सस्ता है।

साहित्य विक्रय केन्द्र पर आरोग्यवर्धक वनौषधियाँ, प्रेरणादायी मिशन की ऑडियो-वीडियो सीडी, स्टिकर तथा अन्य दीगर साहित्य भी उपलब्ध हैं।

4 ऋषियों के मंदिर

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की हिमालय यात्रा के समय उनका वहाँ हजारों वर्षों से तप कर रहे सूक्ष्म शरीर धारी ऋषियों से वार्तालाप हुआ था। ऋषियों ने अपने अधूरे पड़े कार्यों को आगे बढ़ाने का अनुरोध पूज्य गुरुदेव से किया था। गुरुदेव ने इसे आज्ञा मानते हुए सहर्ष स्वीकृति दी और शान्तिकुञ्ज आकर 21 ऋषियों के आन्दोलनों को गति दी। ऋषिक्षेत्र में उनमें से सात ऋषियों की प्रतिमाएँ स्थापित की गयी हैं, जिनमें वे ऋषि सूक्ष्म रूप में एक अंश से निवास कर शक्ति और संरक्षण दे रहे हैं।

5 गायत्री माता का मंदिर

ईश्वर परायण आध्यात्मिक जीवन शैली में देव-दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। अपने इष्ट-आराध्य के गुणों को जीवन में अपनाने की सतत प्रेरणा पाना और उनसे अनुग्रह-आशीर्वाद की याचना करना इसका मुख्य प्रयोजन है।

पूज्य आचार्य जी ने बताया कि ईश्वर से माँगने योग्य सर्वश्रेष्ठ वस्तु है, सद्बुद्धि। व्यक्ति का विवेक जाग जाये, सद्बुद्धि आ जाये तो व्यक्ति स्वतः ही सन्मार्ग की ओर बढ़ता जायेगा, हर परिस्थिति में सुख और संतोष की अनुभूति कर सकेगा। गायत्री मंदिर यही दिव्य प्रेरणा देता है।

भटका हुआ देवता :

गायत्री मंदिर में ही 'भटका हुआ देवता' का मंदिर भी है। आचार्य जी का कथन है कि जीवन ही वह प्रत्यक्ष देवता है, जिसे साधकर आत्मशक्तियों को जगाने और सद्गुण सम्पन्न बनाने की आवश्यकता है। अध्यात्म की समस्त शिक्षाओं का सार यही है। वेद, उपनिषद् यही कहते हैं।

साधना कक्ष :

शान्तिकुञ्ज के वातावरण में दिव्यता की अनुभूति हर साधक को होती है। लगभग एक करोड़ गायत्री मंत्र जप की दैनिक साधना और यज्ञ का ही यह प्रभाव है। गायत्री मंदिर के सामने बने साधना कक्ष में बैठकर मंत्रजप, ध्यान करने वाले को यहाँ होने वाली सामूहिक साधना का लाभ मिलता है।

6 अखण्ड दीप

यहाँ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा सन् 1926 की बसंत पंचमी के दिन प्रज्वलित ज्योति के दर्शन होते हैं। यह दीप आचार्य जी ने अपनी जन्मभूमि गाँव-आँवलखेड़ा, जिला-आगरा (उ.प्र.) में 15 वर्ष की आयु में प्रज्वलित किया था, जो आज तक अखंड है।

आचार्य जी ने इसके सान्निध्य में कठोर तपश्चर्या करके इसे विशाल गायत्री परिवार की सारी उपलब्धियों का मूल स्रोत बनाया है। इसके सान्निध्य में 2400 करोड़ से अधिक गायत्री जप सम्पन्न हो चुके हैं। इसके दर्शन मात्र से दिव्य प्रेरणा एवं शक्ति संचार का लाभ सभी को मिलता है।

7 देवात्मा हिमालय मंदिर

देवात्मा हिमालय मंदिर विश्व की एक अनूठी स्थापना है, जो अन्यत्र कहीं नहीं है। यहाँ चारों धाम, पंच प्रयाग व गंगा-यमुना की पावन धाराओं के मनोरम दर्शन होते हैं।

हिमालय विश्व की आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र है, जहाँ ऋषियों की संसद सनातन काल से तप कर रही है। अध्यात्म पथ के साधकों के सहज आकर्षण का केन्द्र है 'हिमालय'। पूज्य गुरुदेव का मानना है कि अध्यात्मपथ के हर पथिक को इसका ध्यान करना चाहिए, उससे उसे दिव्य शक्तियों का पोषण मिलता है। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में देवात्मा हिमालय की स्थापना करते हुए उसका ध्यान करने का अवसर साधकों को सहजता से मिले, ऐसी व्यवस्था की है।

8 देव संस्कृति दिग्दर्शन प्रदर्शनी

ऋषियुग्म पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माता जी का जीवन परिचय, उनकी युग निर्माण योजना, शान्तिकुञ्ज से चलाये जा रहे रचनात्मक आन्दोलन, पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखे गये विपुल साहित्य को चित्रों के माध्यम से संक्षेप में देखने-समझने का अवसर यहाँ पर मिलता है । पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखी गयी पुस्तकें भी यहाँ पर उपलब्ध हैं।

9 हरीतिमा देवालय

वनस्पतियों से जुड़े शान्तिकुञ्ज के दो प्रमुख अभियान हैं, 1. हरीतिमा संवर्धन-वृक्षगंगा अभियान और 2. वनौषधियों से स्वास्थ्य संवर्धन। हरीतिमा देवालय में विभिन्न क्षेत्रों में पायी जाने वाली सामान्य और दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ संग्रहीत हैं। यहाँ उनकी पहचान कराने, उनके गुण और उपयोग विधि बताने का विधिवत् प्रशिक्षण दिया जाता है। लोगों को बताया जाता है कि वे इन सस्ती, सर्वसुलभ जड़ी-बूटियों का सेवन करते हुए भी कैसे पूरी तरह स्वस्थ रह सकते हैं। इस शिक्षण का एक मासीय लोकसेवी प्रशिक्षण सत्र में भी समावेश है।

हरीतिमा देवालय में गमले, घर, खेत आदि में वृक्ष कैसे लगायें, हरीतिमा कैसे बढ़ायें, इसका भी प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ आने वालों को प्रसाद के रूप में विभिन्न वृक्षों की पौध भी उपलब्ध करायी जाती है।

शान्तिकुञ्ज से सम्बद्ध संस्थान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय (दूरी 600 मीटर)

देव संस्कृति विश्वविद्यालय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और उत्तराखंड शासन से मान्यता प्राप्त शांतिकुंज द्वारा संचालित एक अद्वितीय विश्वविद्यालय है। यहाँ के प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर और शोधपरक पाठ्यक्रमों में आधुनिक शिक्षा में दक्षता के साथ विद्यार्थियों के जीवन को आध्यात्मिक जीवन शैली में ढालकर उसे गुण, संस्कारों से समृद्धि करने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यहाँ के पाठ्यक्रम आजीविका उपार्जन और समाजसेवा के अ%छे अवसर प्रदान करने वाले हैं।

यह विश्वविद्यालय देश-विदेशों में खूब लोकप्रिय है। अमेरिका, रूस, जर्मनी, चीन, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, भूटान, श्रीलंका आदि कई देशों के विद्यार्थी इसमें अध्ययन करते हैं। देसंविवि और इनमें से कई देशों के उच्च शिक्षण संस्थानों के साथ शिक्षा समझौते हुए हैं।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

(दूरी 800 मीटर)

गंगातट के सुरम्य वातावरण में स्थापित ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान मंत्रशक्ति, ध्यान, प्राणायाम, यज्ञ जैसी आध्यात्मिक साधनाओं का जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने वाली प्रयोगशाला है। यहाँ के निष्कर्ष और चिंतन अध्यात्म को विज्ञान की कसौटी पर खरा सिद्ध करने वाले होते हैं।